

61 वां दीक्षांत समारोह

भा. कृ. अ. प. – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हरित क्रांति का जनक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), ने अपने गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के माध्यम से कृषि उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि को गति देना जारी रखा है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने 24 फरवरी 2023 को NASC परिसर, नई दिल्ली के भारत रत्न श्री सी सुब्रमण्यम हॉल में अपना 61वां दीक्षांत समारोह आयोजित किया। संस्थान के दीक्षांत समारोह के लिए, श्री जगदीप धनखड़, माननीय उपराष्ट्रपति, भारत सरकार ने समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। इसके साथ ही सम्मानित अतिथि केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी, कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री कैलाश चौधरी जी भी इस कार्यक्रम के उपस्थित रहे। इस अवसर पर डेयर के सचिव एवं महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, डॉ. हिमांशु पाठक; सचिव उपराष्ट्रपति, भारत सरकार, श्री सुनील कुमार गुप्ता.; भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के कुलपति एवं निदेशक, डॉ. ए. के. सिंह; अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (शिक्षा) डॉ. अनुपमा सिंह, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान), डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी तथा संयुक्त निदेशक (प्रसार) डॉ. रविन्द्र पडारिया भी उपस्थित रहे।

दीक्षांत समारोह के दौरान, माननीय उपराष्ट्रपति ने 5 एम.एस.सी छात्रों और 5 डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों को IARI मेरिट मेडल से सम्मानित किया और उन्होंने आनुवंशिकी संभाग के डॉक्टरेट छात्र श्री राहुल कुमार को भा. कृ.अनु.सं. सर्वश्रेष्ठ छात्र पुरस्कार 2022 और एम.एस.सी छात्र श्री तरुण शर्मा को नाबार्ड-प्रोफेसर वी.एल. चोपड़ा गोल्ड मेडल -2022 से भी सम्मानित किया। उन्होंने वर्ष 2021 के लिए डॉ. एच के जैन मेमोरियल यंग साइंटिस्ट अवार्ड डॉ अमलेंदु घोष, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान संभाग को और वर्ष 2022 के लिए डॉ अदिति कुंडू, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि रसायन विभाग को प्रदान किया।

मुख्य अतिथि ने संस्थान के द्वारा विकसित गेहूं की 10 किस्मों क्रमशः; एचडी 3406 एचडी 3407 एचआई 1650 (पूसा ओजस्वी), एचआई 1653 (पूसा जाग्रति), एचआई 1654 (पूसा अदिति), एचआई 1655 (पूसा हर्ष), एचआई 8826 (पूसा पोष्टिक) और एचआई 8830; चावल की दो किस्मों, पूसा बासमती 1882 और पूसा साम्भा 1853.; चने की किस्म - पूसा जेजी-16 , पूसा सरसों-34 एवं बागवानी फसलों में गुलाब की दो किस्में (पूसा लक्ष्मी और पूसा भार्गव); गेंदे की दो किस्में (पूसा पर्व और पूसा उत्सव); ग्लैडियोलस (पूसा रजत); गुलदाउदी (पूसा लोहित) और बोगेनविलिया (पूसा आकांक्षा) का विमोचन किया।

दीक्षांत समारोह के दौरान 402 छात्र-छात्राओं ने डिग्रियां प्राप्त कीं, जिनमें भारत देश के अतिरिक्त अन्य देशों के छात्र-छात्राएँ भी शामिल हैं।

अपने सम्बोधन में श्री. धनखड़ ने स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने वाले सभी छात्रों और अनुसंधान और शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार प्राप्त करने वाले सम्मानित शिक्षकों को बधाई दी। उन्होंने नवोदित युवाओं के साथ-साथ कई फसलों और पशुधन उत्पादों के उत्पादन में कई प्रथम स्थान हासिल करके और कृषि में बेहद योग्य और अनुभवी मानव संसाधनों की उपस्थिति से वैश्विक क्षेत्र में कृषि महाशक्ति के रूप में देश की अभूतपूर्व वृद्धि के लिए तकनीकी प्रगति प्रदान करने में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थानकी भूमिका की सराहना की। साथ ही उन्होंने कहा कि नए सीमांत ज्ञान और कौशल से लैस पीढ़ी कृषि में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए लोगों में अपार विश्वास और सुरक्षा की भावना पैदा करती है।

उन्होंने अपने उद्बोधन में संस्थान को बधाई देते हुए कहा कि लैब में विकसित तकनीक अब जमीन तक पहुंच रही है, तथा आग्रह किया कि अब लैब को कृषि प्रक्षेत्र पर ही होना चाहिए। उन्होंने कृषि के बुद्धिजीवियों से शुद्ध विज्ञान और प्रौद्योगिकी के

क्षेत्र से समर्थित अत्याधुनिक तकनीकों के साथ कृषि के नए युग में प्रवेश करने के तरीकों का अध्ययन करने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि कृषि यंत्र बनाने में नवाचार को बड़े पैमाने पर लिया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया, कि कृषि उत्पाद के मूल्यवर्धन के लिए प्रयास प्रक्षेत्र स्तर पर किए जाने चाहिए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि देश में हो रहे कृषि अनुसंधान, कृषि और कृषि क्षेत्र में नवाचारों, गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन और तकनीकी अनुकूलन के साथ वृद्धिशील हो कर राष्ट्र की सेवा करेंगे।

डॉ. ए. के. सिंह, निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने अपने संबोधन में, संस्थान की गेहूं की किस्मों जैसे एचडी 2967, एचडी 3086 और अन्य के बारे में जानकारी दी, जिनकी खेती लगभग 15 मिलियन हेक्टेयर में की जाती है और देश के अन्न भंडार में लगभग 60 मिलियन टन गेहूं का योगदान करती है। इस वर्ष को 'अंतर्राष्ट्रीय श्रीअन्न वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है, इस सन्दर्भ में संस्थान का प्रमुख ध्यान पोषण सुरक्षा प्रदान करने के लिए बायोफोर्टिफाइड बाजरा की किस्मों के विकास पर है। इसी दिशा में काम करते हुए संस्थान द्वारा चार बायोफोर्टिफाइड बाजरे की किस्में, पीपीएमआई 1280, पीपीएमआई 1281, पीपीएमआई 1283 और पीपीएमआई 1284 (उच्च लोह और जस्ता सांद्रता के साथ) विकसित की गई हैं।

डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (शिक्षा) ने बताया कि पूसा संस्थान ने इस वर्ष स्नातकोत्तर के साथ स्नातक शिक्षण को शुरू करके अपने गौरवशाली इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। नई शिक्षानीति के तहत, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने 306 स्नातक छात्रों का पहला बैच और अन्य कार्यक्रमों को पूसा संस्थान जैसे अन्य समानांतर सहयोगी संस्थानों में शुरू करने में अहम भूमिका निभाई है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, झारखंड और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, असम में छात्रों के लिए कृषि स्नातक डिग्री (B.Sc) को प्रारम्भ किया है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने अपने सहयोगी संस्थानों के साथ मिलकर B.Tech (इंजीनियरिंग), B.Tech (जैव प्रौद्योगिकी), और B.Sc (सामुदायिक विज्ञान, ऑनर्स) के लिए यूजी कार्यक्रम भी शुरू किए हैं।

साथ ही सभा में उपस्थित लोगों को यह जानकारी भी दी गई कि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा यू-ट्यूब पर 'पूसासमाचार' कार्यक्रम शुरू किया गया है जिसको किसानों द्वारा बहुत सराहना मिल रही है। इसके द्वारा किसानों और अन्य हितधारकों को नवीनतम तकनीकों और विभिन्न फसलों के लिए मौसम-वार परामर्श वीडियो-आधारित सामग्री के रूप में उपलब्ध कराया जाता है। पूसा समाचार को हिंदी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, बांग्ला और उड़िया भाषा में यू-ट्यूब चैनल के साथ-साथ व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से प्रसारित किया जाता है।

दीक्षांत समारोह का समापन डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता और संयुक्त निदेशक (शिक्षा) द्वारा औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Press Note
61st Convocation
ICAR-Indian Agricultural Research Institute, New Delhi

Indian Agricultural Research Institute (IARI), a premier institute of agriculture, which heralded the Green Revolution, has continued to accelerate the growth in agricultural production and productivity through its quality research, education and extension. IARI organised its 61st Convocation in the Bharat Ratna Shri C

Subramaniam Hall of NASC complex, New Delhi on 24th February 2023. For the Convocation of the Institute, Sh. Jagdeep Dhankar, Hon'ble Vice President, Govt. of India graced the occasion as the chief guest of the function. The program was also attended by Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, Shri Narendra Singh Tomar Ji, Honourable Minister of State, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Sh. Kailash Chaudhary Ji as the guest of Honour during the event. Dr. Himanshu Pathak, Secretary DARE and Director General, ICAR, Sh. Sunil Kumar Gupta, Secretary, Vice President, GOI also attended the program with Dr. A. K. Singh, Director; Dr. Anupama Singh, Dean and Joint Director (Education); Dr. Viswanathan Chinnusamy, Joint Director (Research) and Dr. Rabindranath Padaria, Joint Director (Extension) of ICAR-IARI.

During the convocation, Hon'ble Vice President awarded IARI merit medals to 5 M.Sc. students and 5 students receiving their doctoral degrees. He also awarded IARI Best Student Award 2022 to Mr Rahul Kumar, the doctoral student of Division of Genetics and NABARD-Professor VL Chopra Gold Medal-2022 to MSc student, Mr. Tarun Sharma, Division of Agronomy. He also presented Dr. H.K. Jain Memorial Young scientist award to Dr. Amlendu Ghosh, Senior Scientist, Division of Plant Pathology, for the year 2021 and to Dr. Aditi Kundu, Senior Scientist, Division of Agricultural Chemicals, IARI for the year 2022. In this convocation a total of 402 students, including those of India and of other countries, studied at IARI under international programmes, have received their Post Graduate and Doctoral degrees.

On this occasion, Hon'ble Vice President released different varieties of field crops and flower crops. In wheat, 10 varieties were released including HD 3406 and HD 3407, HD 3369, HI 1650 (Pusa Ojaswi), HI 1653 (Pusa Jagrati), HI 1654 (Pusa Aditi), HI 1655 (Pusa Harsha), HI 8826 (Pusa Poshtik) and HI 8830 (Pusa Kirti) , in Rice two varieties PB 1882 and Pusa Sambha 1853, in chickpea, Pusa JG-16 - a drought tolerant variety, in mustard Pusa Mustard-34: in flowers two varieties of Rose (Pusa Lakshmi and Pusa Bhargava); 2 Marigold varieties (Pusa Parv and Pusa Utsav); and one variety each of Gladiolus (Pusa Rajat); Chrysanthemum (Pusa Lohit) and Bougainvillea (Pusa Akansha). He also released three publications including A text book on "Basics of Agro-Chemical Formulations: Highlighting the Importance of Expanding the Domain of Agrochemical Research and Development"; PG School Annual Report 2021-22 and Agro-Startup Innovation (A compilation by ZTM BPD unit).

In his address, Sh. Dhankar congratulated all the students who received the postgraduate and doctoral degrees and the esteemed faculty who received awards for their excellence in research and academics. He appreciated the role of IARI in providing technological advancements for the country's spectacular rise as agricultural powerhouse on global arena by securing several firsts in the production of many crops and livestock products and the presence of highly skilled, qualified and experienced human resources in

agriculture, along with budding young generation equipped with latest knowledge and skills, evoke a sense of confidence and security to combat the emerging challenges in agriculture.

He congratulated that the technologies developed in lab are reaching to land, he urged that now lab must shift to the land. He urged the intelligentsia of agriculture to study avenues to enter the new era of agriculture with cutting-edge technologies supported from the realm of pure science and technology. He also mentioned that innovation in making agricultural implements should be taken up on larger scale. He emphasised that efforts should be made for the value addition of farm produce at farm level. He expressed his confidence that the Indian agricultural research will serve the nation in incremental trajectory with innovations, quality human resource and technological adaptation in agriculture and farm sector.

In his address, Dr A. K. Singh, Director, IARI informed all about the IARI wheat varieties such as HD2967, HD 3086 and others that are cultivated in nearly 15 million ha and contribute approximately 60 million tons of wheat to the Nation's granary. Currently, the *Pusa Basmati* rice varieties account for 90% of the total foreign exchange. In the current year IARI is going to add five Basmati paddy varieties i.e. PB-1847, PB-1885 and PB-1886 and two herbicide tolerant varieties e.g. PB-1979 and PB-1985, the last two being especially suitable for the DSR farming in northern plains. Not only developing varieties, IARI ensures availability of them to the farmers in a regular basis. The institute produced 707.92 tonnes seeds of cereal, pulse and oil seed varieties. The primary stakeholders of agriculture are the farmers and extension plays the ultimate role for the success of any discovery or invention. The extension activities of IARI have been spread all over India through innovative extension programmes. All the varieties of IARI have produced significantly higher yield compared to the local varieties.

Dr Anupama Singh, Dean and Joint Director (Education) informed that IARI has added a new chapter to its rich human-resource development process by opening up its door to the undergraduate teaching. Under the New Education Policy, the first batch of 306 undergraduate students at IARI and outreach centres in various programs has been initiated. The students have been admitted to B.Sc. (Hons.) Agriculture at IARI New Delhi, IARI, Jharkhand and IARI, Assam. IARI has also started UG programmes for the B.Tech. (Agril. Engineering), B. Tech (Biotechnology), and B.Sc. (Hons.) Community Science at IARI in collaboration with its sister institutes.

The Institute has initiated a unique online programme Pusa Samachar in YouTube in several Indian languages e.g. Hindi, Telugu, Kannada, Tamil, Bangla and Odiya apart from Hindi for informing the Indian farmers about institute, technologies, nuances advisory on critical aspects of crop husbandry, plant protection and general diagnosis and remedy of problems.

The convocation ended with the formal vote of thanks by Dr. Anupama Singh, Dean and Joint Director (Education).